जैन शिक्षा

(तीसरा भाग)

पाठ १—प्रार्थना-नीति शिक्षण।

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, शिशुगण की अब पूरो आश।
ज्ञानभानु का उदय करो अब, मिथ्यातम का होय विनाश ॥१॥
जीवों की हम करुणा पाले, झूठ वचन नहीं कहें कदा।
चोरी कबहु न करि है स्वामी, ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा ॥२॥
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा, तोष सुधा नित पिया करें।
श्री जिन धर्म हमारा प्यारा, इसकी सेवा किया करें ॥३॥
मात पिता की आज्ञा पाले, गुरु की भक्ति धरें उर में।
रहें सदा हम कर्तव्य तत्पर, उन्नति करें निज २ पुर में ॥४॥
दूर भगावें बुरी रीतियाँ, सुखद रीति का करे प्रचार।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब, धर्मोन्नति का करें विचार ॥५॥
सुख दुख में हम समता धारें, रहे अटल जिमि सदा अचल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें, वृद्धि करे निज आतम बल ॥६॥
अष्ट कर्म जो दुख हेतु है, उनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपें निरंतर, विघ्न शोक सब ही टरजाय ॥७॥
हाथ जोड़ कर सीस नमावें, बालक जन सब खड़े खड़े।
आशाएँ ये पूर्ण हुएँ प्रभु, चरण शरण में आन पड़े ॥८॥